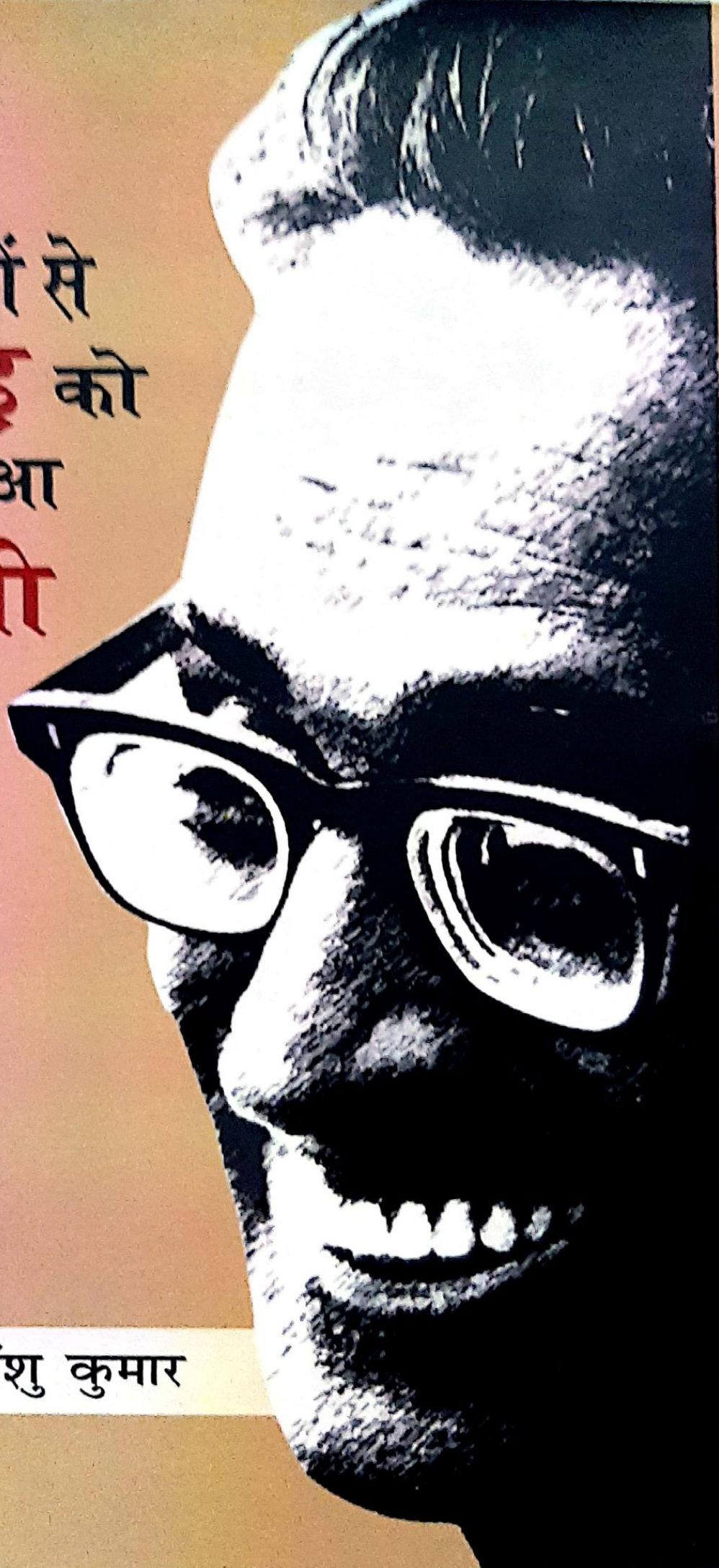


दोनों
कोहनियों से
पहाड़ को
ठेलता हुआ
आदमी



● डॉ. हिमांशु कुमार

आदमी
गवेषण
था ज
ने बि
इन
असंति
गोण
बिम्ब
अनुप
दुरुह
सोत
विशि
हिमां
हृदय
किया
शमश
स्पष्ट
कवि
है।
साथ
बन
कोटि

ISBN : 978-93-82329-17-6

प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी कविता में अज्ञेय, शमशेर, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन, मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह आदि कवियों का अध्ययन करते समय ऐसा लगा कि अज्ञेय, शमशेर और मुक्तिबोध की कविताएँ इतनी सरल और सपाट नहीं हैं कि वे पाठकों की समझ में झटपट आ ही जाएँ। इनमें शमशेर तो और भी धीरता, एकाग्रता तथा तल्लीनता की माँग करते हैं। अतः उनकी कविता का सरसरी पाठ नहीं किया जा सकता। शमशेर को एक-एक कर ही पढ़ा जा सकता है; कारण कि उनकी कविता में प्रतीकात्मक प्रयोग चित्रकला से अधिगृहित है। अल्प शब्द प्रयोग से भी व्यापक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

शमशेर की अनुभूति का पाठ विराट् है। अतः उनकी कविता के अर्थ को समझने के लिए प्रतीकों की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का गंभीर अनुशीलन आवश्यक है। चूँकि शमशेर ने अपनी प्रतिभा को अभ्यास के खराद पर खरादा है, इसलिए उसे पूर्ण रूप में समझने के लिए कलात्मक तैयारी की अपेक्षा होती है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि शमशेर विशिष्ट काव्यास्वादक वर्ग के ही कवि हैं, और कवियों के कवि। उन्हें कवियों का कवि कहकर जहाँ एक ओर उनके वैशिष्ट्य को स्वीकार किया गया है, वहाँ दूसरी ओर उन्हें जन सामान्य और व्यापक पाठक वर्ग से दूर करने का यत्न भी किया गया है। कई बड़े समीक्षकों ने साहित्य के अध्ययन के लिए उसकी पृष्ठभूमि, परम्परा और इतिहास की जानकारी को जरूरी माना है। यदि पाठक की पृष्ठभूमि साहित्यिक होती है तो वह निश्चय ही काव्यास्वादन के मामले में समर्थ होता है, किंतु, कविता तो ऐसी चीज है कि उसके

प्रकाशक : युगान्तर प्रकाशन

डी-750, गली-4, अशोक नगर

शाहदरा-110093, मो. 9968030400 (दिल्ली)

मो. 8802579680

शाखा - उमा नगर, (पूर्वी) बाजार समिति, पोस्ट-साँढ़ा

जिला-छपरा (सारण), बिहार-841301

email : yugantar3180@gmail.com

© : लेखक

संस्करण : 2016

मूल्य : ₹ 450.00

मुद्रक : आशीष प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

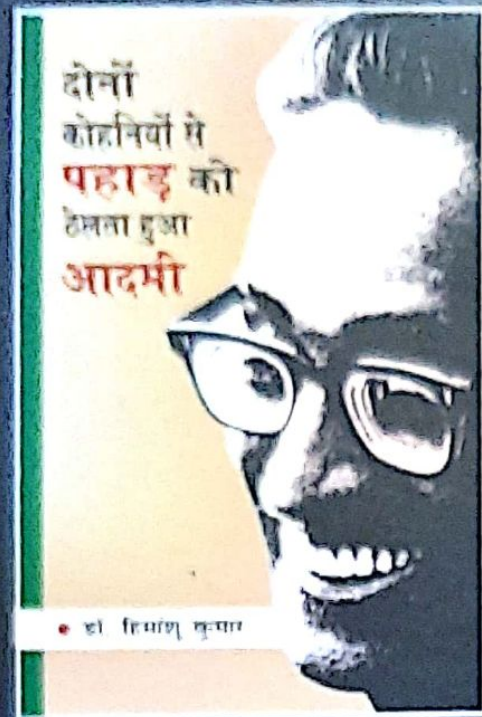
अनुक्रम

प्राक्कथन	5
पल दो पल का जीवन	9
कवि अनन्य शमशेर	30
प्रकृति, प्रेम और सौंदर्य	33
शिल्प-सौंदर्य	62
शमशेर की गज़लें और उनका शिल्प	84
गीत	95
गद्य साहित्य	103
डायरी-साहित्य	110
निबंध	114
प्रगतिशीलता के आयाम	125
शमशेर की कुछ कविताओं के भाष्य	158
सागरतट	165
एक आदमी दो पहाड़ों को कुहनियों से ठेलता (रचनाकाल—1950)	173
एक पीली शाम (1953 की रचना)	179

पल दो पल का जीवन

हिन्दी के शिल्प सजग एवं सौंदर्यबोधी कवि शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 12 जनवरी 1911 को देहरादून में हुआ था। माता परमदेवी और पिता तारीफ सिंह ने इनका भारी-भरकम नाम शमशेर बहादुर सिंह दिया, जो सिमटकर शमशेर के रूप में रह गया। देहरादून इनका ननिहाल था। जाट जाति के पैंवार गोत्र में जन्मे शमशेर बहादुर सिंह के पिता बलिष्ठ थे—कद-काठी में हट्टे-कट्टे, पर स्वयं शमशेर बहादुर सिंह दुबले-पतले। नाना मुंशी भूप सिंह की छत्रछाया में इनका बचपन बीता। भूप सिंह का घर शहरी मध्यम वर्ग के घर जैसा था। ननिहाल का वातावरण सौम्य और सुसभ्य था। वहाँ आचरण और सभ्यता के सारे कायदे कानून सिखाए जाते और भाषा गलत बोलने की इजाजत नहीं दी जाती। उनके नाना मुंशी भूप सिंह खुद अदीब और हकीम थे, तथा फारसी-उर्दू के अध्यापक। शमशेर के जन्म के समय वे स्कूल की नौकरी से सेवा निवृत्त होकर यूनानी और मिस्त्रानी चिकित्सा प्रणाली से हकीमी का काम करते थे। शमशेर के मामा लोग भी सलीके के व्यक्ति थे। घर का अदबी वातावरण उर्दू नुमा था और उन दिनों वहाँ उर्दू की पढ़ाई भी होती थी। न सिर्फ मदरसों, बल्कि दूसरे किस्म के स्कूलों में भी उर्दू की पढ़ाई होती थी। उर्दू कचहरी की भाषा भी थी। अदब, उर्दू, भाषा, सभ्यता-संस्कृति की तालीम उन्हें घर और स्कूल के वातावरण से ही मिली थी। शमशेर की माता परमदेवी उनके पिता बाबू तारीफ सिंह की तीसरी पत्नी थीं। दो पत्नियों का निधन तीन साल के दरम्यान ही हो गया था। शमशेर ने स्वयं ही, जहाँ वे पैदा हुए थे, वहाँ का चित्र खींचते हुए लिखा है : जहाँ मैं पैदा हुआ उस मकान के सामने गुरु रामदास का गुरुद्वारा है और उसके सामने एक बड़ा-तालाब है, दुकानें हैं, बस्ती है। उसके पीछे मसूरी पहाड़ का दृश्य दिखाई देता है और दूसरी चोटियाँ, छोटी-मोटी चोटियाँ हैं। रात को वहाँ रोशनी जगमग-जगमग करती है और देहरादून से देखी जा सकती है। इस मोहक प्रकृति सौंदर्य-सुषमा का असर

दोनों कोहनियों से पहाड़ को ठेलता हुआ आदमी / 9



**युग
उप**

युगांतर प्रकाशन

डी-750, गली नं. 4, अशोक नगर
शाहबरा, दिल्ली-110093

ISBN 978-93-82329-17-6

